जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

ढ़ाई अक्षर के आत्मा को जान लेना ही ज्ञान है, पाण्डित्य है।

- बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-25

वर्ष : 25, अंक : 11
सितम्बर (प्रथम) 2002

सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
प्रबन्ध सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(106 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

आत्मा के स्वरूप का ज्ञान कराते हुये कहते हैं कि जिसतरह चने में जो स्वाद शक्तिरूप से, अव्यक्त रूप से विद्यमान है वही स्वाद उसे सेंकने पर व्यक्त हो जाता है; उसीतरह चैतन्यपिण्ड आत्मा में सुख विद्यमान है, उसकी श्रद्धा और उसमें एकाग्रता के जोर से वह सुख मोक्षदशा में प्रकट हो जाता है। तथा जिसतरह वह सिका हुआ चना पुन: उगता नहीं है उसीतरह यह मुक्त आत्मा भी फिर पुन: जन्म-मरण नहीं करता।

ऐसी मोक्षदशा प्रकट करने का अवसर इस मनुष्यभव में ही है; अत: सर्वप्रथम तो सत्समागम से आत्मस्वभाव की पहिचान करो। ऐसा निर्णय करो कि मैं इस देह में रहनेवाला इस देह से भिन्न आत्मा हूँ। मैं रागी होकर भी राग से भिन्न शुद्ध हूँ, परम पवित्र हूँ, ज्ञानानन्द से भरपूर हूँ। मुझमें जो रागादि विकारीभाव होते हैं, वे दुखरूप हैं, दुखमय हैं, वह मेरा स्वरूप नहीं है। संयोग से मुझे कोई सुख-दुख नहीं - ऐसे चिन्तन से राग-द्वेष का अभाव होकर मोक्षदशा का निराकुल सुख प्रकट होता है।

मुक्त होने की ताकत इस आत्मा में ही लबालब भरी है। शक्तिरूप से यह आत्मा ही परमात्मा है। इसकी यथार्थ पहिचान करने से आत्मा स्वयं परमात्मा हो जाता है। यह सब इसी मनुष्यभव में हो सकता है। बस इसी कारण ज्ञानियों ने इस मानव देह को सर्वोत्तम कहा है।

प्रत्येक आत्मा परमात्मा की भांति ही सच्चिदानन्द की मूर्ति है। यद्यपि दोनों की वर्तमान पर्याय में अन्तर है; परन्तु स्वभाव से तो सब आत्मायें प्रभु ही हैं। अपूर्णता आत्मा का वास्तविक स्वरूप नहीं है। छोटे-बड़े शरीर और वर्तमान क्षणिक अवस्था में अधूरापन है, उसे लक्ष्य में न लेकर त्रिकालीस्वभाव की दृष्टि से देखें तो प्रत्येक आत्मा का स्वभाव परिपूर्ण है; किन्तु उसे भूलकर अज्ञानी जीव स्वयं को शरीर एवं विकारभाव जितना ही मानता है। इसीकारण संसार में रखड़ता है।

ज्ञानी कहते हैं कि यह मनुष्यभव अतिदुर्लभ है। अतिपुण्य उदय से यह मानव देह मिलती है। अत: इसे सार्थक कर लेना चाहिये। किसी अन्य देह में पूर्ण सद्विवेक का उदय नहीं होता और मोक्षमार्ग में प्रवेश नहीं हो सकता; अत: पूरा प्रयत्न करके इस मनुष्यजन्म को सफल कर लेना चाहिये।

अन्य तीन गतियों में सम्यग्ज्ञान हो सकता है; परन्तु पूर्ण सद्विवेक अर्थात् केवलज्ञान तो मात्र मनुष्य पर्याय में ही होता है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ही मोक्षमार्ग है; ये ही मोक्ष के कारण हैं तथा ये चारों गतियों में होते हैं। सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान ही वास्तव में मुक्ति का राजमार्ग है। हमें जो यह दुर्लभ मनुष्य भव मिला है उसको हमें जैसे भी बने वैसे आत्मा की ओर वीतरागमार्ग में लगाना चाहिये ।

कितने ही मूर्ख जीव दुराचार में, अज्ञान में, विषयभोग में और अनेकप्रकार की ममता में अपनी मनुष्य देह को वृथा ही बर्बाद कर रहे हैं। अमूल्य चिन्तामणि रत्न के समान यह मनुष्य देह आत्मा की प्राप्ति के लिये मिली है; परन्तु अज्ञानी जीव विषय-कषाय में ही इसे बर्बाद कर देते हैं। कितने ही जीव आत्मा की समझ बिना क्रियाकाण्ड में रुककर अपना मनुष्यभव खो देते हैं। जो आत्मा का भान नहीं करे तो उसके जीवन में और पशु के जीवन में कोई अन्तर नहीं है। इसलिये जैसे बने तैसे सत्समागम में आत्मा की पहिचान कर लेना चाहिये और इस मनुष्यभव में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप धर्म का सेवन करना चाहिये- यही जरूरी है, यही आत्महित का उपाय है।

फैडरेशन शाखायें ध्यान दें

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का प्रतिवर्ष दिसम्बर में होनेवाला अधिवेशन इस वर्ष श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर में ही दिनांक 13 से 22 अक्टूबर 2002 तक लगनेवाले आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर के अवसर पर ही **दिनांक 13 से 15 अक्टूबर** तक आयोजित किया जा रहा है। फैडरेशन शाखायें तदनुसार अधिवेशन की तैयारी करें।

सभी फैडरेशन शाखाओं को पृथक से पत्र भेजे ही जा रहे हैं।

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन

13

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे .....)

समवशरण में धर्मोपदेश के प्रभाव से जयकुमार का रहा–सहा मोह और भी क्षीण हो गया था। फलस्वरूप उन्हें बोधि अर्थात् रत्नत्रय का लाभ प्राप्त हो गया और उन्होंने पुत्र अनन्तवीर्य को राज्य सोंपकर छोटे भाई विजय के साथ मुनि दीक्षा ले ली। जयकुमार के साथ ही 108 अन्य राजाओं ने भी दीक्षा धारण की। उधर सुलोचना ने भी संसार का असार स्वरूप जानकर ब्राह्मी एवं सुन्दरी के पास आर्यिका दीक्षा ले ली। मेघेश्वर जयकुमार शीघ्र ही द्वादशांग के ज्ञाता होकर भगवान ऋषभदेव के गणधर हो गये। इसीक्रम में और भी अनेक भूमिगोचरी और विद्याधर राजाओं ने जब दीक्षा धारण कर ली तब भगवान के 84 गणधर हो गये और गणों की संख्या 84 हजार हो गई।

भगवान ऋषभदेव की कुल आयु 84 लाख पूर्व की थी। उसमें 83 लाख पूर्व छद्मस्थ एवं गृहस्थ अवस्था में ही बीत गई थी। यह जानकर सामान्यजनों को आश्चर्य हो सकता है कि जन्म से ही मति, श्रुत और अवधिज्ञान के धारक क्षायिक सम्यग्दृष्टि, संसार, शरीर और भोगों की असारता तथा क्षणभंगुरता से भली भाँति परिचित तीर्थंकर के जीव भी इतने लम्बे काल तक राज–काज में उलझे रह सकते हैं। पर, ध्यान रहे जिन जीवों की पर्यायगत योग्यता जैसी हो वही तो होगा। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। ऐसा ही वस्तु का स्वरूप है।

कल्पना करें आज के युगानुसार किसी की 84 वर्ष की कुल आयु हो और वह सम्यग्दृष्टि हो, तत्त्वज्ञानी होने के साथ संसार–शरीर, भोगों की निस्सारता, अशरणता एवं क्षणभंगुरता से सुपरिचित हो; फिर भी 83 वर्ष तक घर गृहस्थी में उलझा रहे तो क्या वस्तु स्वरूप से अनभिज्ञ साधारणजन उसे ज्ञानी मान पायेंगे ? पर ऐसा होना भी संभव है। अत: भगवान ऋषभदेव के उक्त उदाहरण से स्वच्छन्दता का पोषण नहीं होना चाहिये, पर ऐसा होना सर्वथा असंभव है – यह कहकर उपेक्षा भी नहीं की जा सकती।

अन्तिम एक लाख पूर्व काल तक तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दिव्यध्वनि अनेक भव्यजीवों को संसार सागर से पार उतारने में निमित्त बनी। उसके बाद अब तक उन्हीं की दिव्यध्वनि का प्रसारण वर्तमान चौबीसी के सभी तीर्थंकर अपने दिव्यध्वनि द्वारा करते आ रहे हैं। ऋषभदेव द्वारा राज्य शासन में दी गई असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, विद्या, शिल्प की व्यवस्था और तदनुसार स्थापित वर्ण व्यवस्था भी आज तक सुचारु रीति से संचालित है।

इसप्रकार हरिवंशपुराण के 12वें सर्ग में प्रसंगोपात्त तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का संक्षिप्त परिचय कराया गया है।

तेरहवाँ सर्ग – इसमें चक्रवर्ती भरत द्वारा अपने पुत्र अर्ककीर्ति का राज्याभिषेक करके जिनदीक्षा लेने का उल्लेख है। वहाँ कहा है कि उनके कर्म बन्धन की स्थिति इतनी जल्दी क्षीण हुई कि उन्होंने पंचमुष्ठी केशलोंच के बाद तत्काल ही ध्यानस्थ होकर केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। सो ठीक ही है। कहा भी है – 'जो कर्म में शूरवीर होता है वही धर्म में शूरवीर होता है।' षट्खण्डाधिपति भरत चक्रवर्ती के साथ यह कहावत चरितार्थ क्यों नहीं होती ? होती ही।

तदनन्तर बत्तीसों इन्द्रों ने उनके केवलज्ञान की पूजा की और भगवान भरत ने अपने केवलज्ञान सूर्य की दिव्य किरणों से एक लाख पूर्व तक मोक्षमार्ग को प्रकाशित किया। तथा आयु के अन्त समय वे वृषभसेन आदि गणधरों के साथ कैलाशपर्वत पर आरूढ़ हो गये और शेष कर्मों का क्षय कर वहीं से उन्होंने मुक्ति प्राप्त की।

यहाँ विशेष ज्ञातव्य यह है कि सर्वदर्शी भगवान भरत की आयु भी उनके पिता तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की भाँति ही 84 लाख पूर्व की थी। उसमें से उनके 77 लाख पूर्व तो उनके कुमार काल में ही बीते, छह लाख पूर्व साम्राज्य पद में व्यतीत हुये और उन्होंने केवलज्ञान प्राप्तकर एक लाख पूर्व मुनिपद (अरहंत पद) में विहार करते हुये तत्त्वप्रचार किया। चक्रवर्ती भरत के पुत्र राजा अर्ककीर्ति भी मुक्तिगामी हुये। उस काल में भगवान भरत सहित 14 लाख इक्ष्वाकुवंशी राजा लगातार मोक्ष गये।

ज्ञातव्य है कि भरत के पुत्र अर्ककीर्ति की वंश परम्परा की बीसवीं पीढ़ी में उत्पन्न हुए राजा सूर्य ने अपने नाम से सूर्यवंश चलाया। तथा बाहूबली के पुत्र सोमयश ने अपने नाम से सोमवंश (चन्द्रवंश) चलाया। जिनमें अगणित राजा–महाराजा हुए।

इसप्रकार भगवान ऋषभदेव का तीर्थ इस पृथ्वी पर 50 लाख करोड़ सागर तक चलता रहा। इस तीर्थकाल में सूर्यवंश एवं चन्द्रवंश की दो शाखाओं में उत्पन्न हुये, इक्ष्वाकुवंशी तथा कुरुवंशीय अनेक राजा स्वर्ग और मोक्ष गये।

तदनन्तर सर्वार्थसिद्धि से चयकर (आयुपूर्ण करके) वर्तमान चौबीसी के दूसरे तीर्थंकर अजितनाथ हुये। इनके काल में सगर नाम के दूसरे चक्रवर्ती हुये। यह भी भरत चक्रवर्ती के समान ही वैभव सम्पन्न और प्रसिद्ध हुये। इनके 60 हजार पुत्र थे। सभी अद्भुत चेष्टाओं के धारक थे। सभी में परस्पर अत्यधिक स्नेह था। एक बार ये सभी भाई भ्रमण के लिये कैलाशपर्वत पर गये और वहाँ किसी प्रयोजन से भूमि खोदने लगे। उनकी इस क्रिया से कुपित होकर वहाँ स्थित नागराज ने उन्हें (60हजार पुत्रों को) भस्म कर दिया।

चक्रवर्ती सगर को इस घटना से संसार की असारता और क्षणभंगुरता का विचार आया और उन्होंने पुत्रों के वियोग का शोक त्यागकर तीर्थंकर भगवान अजितनाथ के समीप दीक्षा धारण कर आत्मसाधना के अपूर्व पुरुषार्थ द्वारा कर्म बन्धन से छूटकर मुक्तिप्राप्त कर ली। इसी क्रम में तीसरे तीर्थंकर संभवनाथ, चतुर्थ अभिनन्दननाथ, पंचम सुमतिनाथ, छठवें पद्मप्रभ, सातवें सुपार्श्वनाथ, आठवें चन्द्रप्रभ, नौवें पुष्पदंत और इनके बाद दसवें तीर्थंकर शीतलनाथ हुये।

इसप्रकार इस चतुर्थ काल के प्रारंभ में आदि तीर्थंकर राजा ऋषभदेव के युग में सर्वप्रथम इक्ष्वाकु वंश उत्पन्न हुआ, फिर इसी इक्ष्वाकु वंश से सूर्य वंश एवं चन्द्रवंश उत्पन्न हुये। उसीसमय कुरुवंश तथा उग्रवंश आदि अनेक अन्यवंश प्रचलित हुये। इसके पूर्व भोगभूमि में ऋषि नहीं थे; किन्तु आगे चलकर भगवान ऋषभदेव से दीक्षा लेकर अनेक ऋषि हुये और उनका उत्कृष्ट श्रीवंश प्रचलित हुआ।

दसवें तीर्थंकर भगवान शीतलनाथ के तीर्थकाल में हरिवंश की उत्पत्ति हुई थी, जिसके नाम पर इस प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना हुई है। अब इसी हरिवंश का परिचय प्रसंगोपात्त है। जो हमें मोक्षमार्ग प्रकट करने के लिये प्रेरणा स्रोत बनेगा। **(क्रमश:)**

पर्यूषण पर्व के अवसर पर कौन–कहाँ

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर विद्वान भेजने की व्यवस्था की गई है; जिनकी सूची यहाँ दी जा रही है। 28 अगस्त तक 532 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं। अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण आ रहे हैं। 28 अगस्त तक लिये गये निर्णयानुसार महाराष्ट्र में 109 राजस्थान में 79, मध्यप्रदेश में 147, उत्तरप्रदेश में 56, गुजरात में 29, तमिलनाडु, कर्नाटक, हरियाणा, बिहार, पश्चिम बंगाल एवं केरल में 24, दिल्ली में 49, जयपुर में 24 इसप्रकार कुल 517 स्थानों पर ही विद्वान भेजना संभव हो सका है; जबकि गतवर्ष 502 स्थानों पर ही विद्वान भेजे जा सके थे। ध्यान रहे, इनमें 256 स्थानों पर तो पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक विद्वान ही जा रहे हैं।

विशिष्ट विद्वान

1.**कोटा :** बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', 2.**मुंबई (दादर):** डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर, 3.**आगरा :** पं. नेमीचंदजी पाटनी, 4.**उदयपुर (हिरणमगरी–11) :** पं. रतनचंदजी भारिल्ल, जयपुर, 5.**उदयपुर (मु. मंडल) :** पं. पूनमचंदजी छाबडा, इन्दौर, 6.**मुंबई (घाटकोपर) :** ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर, 7.**मुंबई (मलाड) :** डॉ. उत्तमचंदजी, सिवनी, 8.**दिल्ली :** पं. प्रकाशचन्दजी हितैषी, 9.**उज्जैन :** पं. विमलप्रकाशजी झांझरी, 10.**दिल्ली (राजपुर रोड) :** ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री, 11.**अशोकनगर :** ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियाँधाना, 12.**भोपाल (महावीरनगर) :** ब्र. केशरीमलजी 'धवल', छिन्दवाडा, 13. **मुंबई (सीमंधर जिना.) :** पं. राजेंद्रकुमारजी, जबलपुर, 14.**राजकोट :** पं. कपुरचंदजी 'कौशल', भोपाल, 15.**इन्दौर (परमागम मंदिर) :** पं. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर, 16.**उज्जैन (क्षीरसागर कॉलोनी) :** पं. प्रदीपकुमारजी झांझरी, 17.**दुर्ग :** पं. हरकचंदजी बिलाला, अकोला, 18.**अलीगढ :** पं. अशोकजी लुहाडिया, 19.**कोलकाता :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम', देवलाली।

विदेश में

20. **लंदन** : बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद, 21. **शिकागो (यू.एस.ए.)** : पं. अभयकुमारजी शास्त्री, छिन्दवाडा।

(महाराष्ट्र प्रान्त)

22. **नान्देड (विसावानगर)** : पं. ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, गजपंथा, 23. **नागपुर (इतवारी) :** पं. वीरेन्द्रकुमारजी, आगरा, **24. मुम्बई (बोरीवली) :** पं. राकेशकुमारजी शास्त्री, नागपुर, **25.मुम्बई (भायन्दर) :** पं.शैलेषभाई शाह, तलोद, **26. देऊलगाँवराजा :** पं. दिनेशभाई शाह, मुम्बई, **27. देऊलगाँवराजा :** डॉ. उज्ज्वलाजी शाह, मुम्बई, **28. पूणे :** पं. सुरेन्द्रकुमारजी, उज्जैन, **29. अक्कलकोट :** पं. फूलचन्दजी मुक्किरवार, हिंगोली, **30. अक्कलकोट :** विदूषी मंजूषाजी मुक्किरवार, हिंगोली, **31. नातेपुते :** पं. प्रद्युम्नकुमारजी जैन, मुजफ्फरनगर, **32. जलगाँव :** पं. देवीलालजी मेहता, सोनगढ़, **33. कोल्हापुर :** पं. राजेन्द्रजी भागवतकर, वर्धा, **34. नवागढ़ :** पं. मनोहरजी मारवडकर, नागपुर, **35. नान्देड (सिडको) :** पं. विजयकुमारजी राउत, रिठद **36. गजपंथा :** पं. राजूभाई, कानपुर, **37. गजपंथा :** पं. किशनचन्दजी, अलवर, **38. मलकापुर :** पं. ऋषभकुमारजी शाह शास्त्री, अहमदाबाद, **39. नागपुर (इतवारी) :** पं. यशवन्तजी शास्त्री, खैरागढ़, **40.फलटण :** पं.जिनचन्दजी आलमान शास्त्री, हेरले, **41.डोणगाँव :**विदुषी स्नेहलताजी उदापुरकर, अकोला, **42.अहमदनगर :** पं. संजयकुमारजी शास्त्री, खनियाँधाना, **43.शिरडशाहपुर :** पं. प्रशान्तकुमारजी शास्त्री, राजुरा, **44.देवलाली :** पं. निर्मलकुमारजी, सागर, **45.वाशिम (जवाहरनगर) :** पं. संजयकुमारजी सेठी, जयपुर, **46.वर्धा :** पं. श्रुतेशजी सातपुते शास्त्री, डोणगाँव, **47.सेलू :** पं. सौरभजी शास्त्री, फिरोजाबाद, **48.जवला :** पं. देवीलालजी अम्बेकर, चिखली, **49.तामसा :** पं. संजयजी महाजन, मालेगाँव, **50.विहीगाँव :** पं. दिलीपकुमारजी महाजन, मालेगाँव, **51.मुम्बई (दादर) :** पं. प्रवीणकुमारजी शास्त्री, रायपुर, **52.हर्षी :** पं. नानाजी कंदी, हिंगोली, **53.औरंगाबाद :** पं. रितेशजी शास्त्री, सनावद, **54.मुम्बई (दहीसर) :** पं. रूपेशजी शास्त्री, बैतुल, **55.मुम्बई (दहीसर) :** पं. रत्नेशजी मेहता, हिम्मतनगर, **56.मुम्बई (भायन्दर ईस्ट) :** पं. प्रवेशजी भारिल्ल शास्त्री, करेली, **57.मुम्बई (दहीसर) :** पं. अमोलजी शास्त्री, कातनेश्वर, **58.कुन्थलगिरी :** पं. राजेन्द्रजी पाटील शास्त्री, बेलगाँव, **59.वडूज :** पं. राजकुमारजी काले शास्त्री, रिसोड, **60.अकलूज :** पं. जितेन्द्रजी राठी शास्त्री, नागपुर, **61.लासूर्णा :** पं. अनिलकुमारजी बेलोकर शास्त्री, सुलतानपुर, **62.अणदूर :** पं. परागजी शास्त्री, कारंजा, **63.डासाला :** पं. चन्द्रप्रभातजी शास्त्री, बडामलहरा, **64.फालेगाँव :** पं. दीपकजी डांगे शास्त्री, आजेगाँव, **65.कन्नड :** पं. ज्ञायककुमारजी शास्त्री, राजकोट, **66.मोहोल :** पं. विकासजी कंधारकर शास्त्री, बालापुर, **67.मुम्बई (भायन्दर) :** पं. नवीनजी जैन शास्त्री, अहमदाबाद, **68.मुम्बई (घाटकोपर) :** पं. भरतजी शास्त्री, **69.मुम्बई (मलाड) :** पं. शीतलजी आलमान शास्त्री, हेरले, **70.नागपुर (इतवारी) :** पं. सुनीलजी बेलोकर, सुलतानपुर, **71.नान्देड (विसावा नगर) :** पं. रविशजी गाँधी शास्त्री, बाँसवाडा, **72.पुसद :** पं. सन्तोषजी साहूजी, हस्तपोखरी, **73.रिसोड :** पं. प्रशान्तजी शास्त्री, मौ, **74.सावदा :** पं. विवेकजी सातपुते शास्त्री, डोणगाँव, **75.सेनगाँव :** पं. सन्दीपजी शास्त्री, बिनौता, **76.वाशिम (सैंतवाल मंदिर) :** पं. निकलंकजी शास्त्री, कोटा, **77.गोरेगाँव :** पं. नीरजजी शास्त्री, खडैरी, **78.हाथगाँव :** पं. अशोकजी वानरे शास्त्री, सेलू, **79.बेलोरा :** पं. दिग्विजयजी आलमान शास्त्री, हेरले, **80.चिखली :** पं. रवीन्द्रजी काले शास्त्री, कारंजा, **81.गजपंथा :** पं. अमितजी शास्त्री, लुकवासा, **82.हिंगोली :** पं. संजयजी (इंजि.)खनियाँधाना **83.हिंगोली :** पं. सुरेशजी शास्त्री, राजुरा, **84.मालेगाँव :** पं. केशवरावजी नागपुर, **85.मोताला :** पं. अतुलकुमारजी शास्त्री, कोलारस, **86.पुणे (थेरगाँव) :** पं. बाहुबलीजी ढोकर, **87.खामगाँव :** पं. गेंदालालजी, रामटेक, **88.मुम्बई :** पं. मणिभाई, मुनई, **88.जयसिंगपुर :** पं. पार्श्वनाथजी कुगे, **89.मुम्बई (डोंबिवली) :** पं. चन्द्रकान्तजी नांदगावकर, **90.लोहा :** पं. अशोकजी मिरकुटे, पानकनेरगाँव, **91.कारंजा (सेनगन मंदिर) :** पं. धन्यकुमारजी भोरे, **92.कारंजा (म.ब्र. आश्रम) :** पं. आलोकजी शास्त्री, जालना, **93.मुम्बई (बोरीवली) :** पं. परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, **94.मुम्बई (दहीसर) :** पं. अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, **95.एलोरा :** पं. गुलाबचन्दजी बोरालंकर, शास्त्री, **96.एलोरा :** पं. प्रदीपजी माद्रप शास्त्री, **97.पुणे :** पं. भरतेशजी पाटील शास्त्री, बागेवाडी, **98.लोणावला :** पं. गोकुलचन्दजी जैन, **99.अब्दुललाट :** पं. शीतलजी शेट्टी, **100.हिंगोली :** पं. जयकुमारजी दोडल, **101.सांगली :** विदूषी स्वयंप्रभाजी पाटील, शास्त्री, **102.वसमतनगर :** पं. नेमीचन्दजी महाजन, **103.सोलापुर :** पं. विजयजी कालेगोरे, शास्त्री, **104.सेनगाँव :** पं. प्रशान्तजी बोरालकर, शास्त्री, **105.कुम्भोज बाहुबली :** पं. नेमीनाथजी बालीकाई, दानोली, **106. औरंगाबाद :** पं. कल्याणमलजी गंगवाल, **107.सेनगाँव :** पं. किरणजी उखलकर शास्त्री, **108.नागपुर :** पं. मधुकरजी गडेकर, **109.हिंगोली :** पं. पद्माकरजी

(शेष पृष्ठ 6 पर ...)

विज्ञापन पत्रिका

विज्ञापन पत्रिका

दोडल, **110.मुम्बई (एवरशाइन नगर) :** पं. विपिनजी शास्त्री, आगरा, **111.मुम्बई (अनुशक्तिनगर) :** पं. संतोषकुमारजी जैन, **112.मुम्बई (वाशी) :** पं. सुमेरचन्दजी बेलोकर शास्त्री, **113.सदाशिवनगर :** पं. जितेन्द्र चौगुले शास्त्री, **114.काटोल :** पं. नन्दकिशोरजी मांगुलकर शास्त्री, **115.करमाला :** पं. जीवराजजी जैन, करमाला, **116.जयसिंगपुर :** पं. विजयसेनजी पाटील शास्त्री, **117.देऊलगाँवराजा :** पं. उमाकान्तजी बण्ड शास्त्री, **118.सेलू :** पं. सुरेशजी शास्त्री, राजुरा, **119.नासिक :** पं. राजेन्द्रजी मेहता, **120.सांगली :** पं. महावीरजी पाटील शास्त्री, **121.सगरोली :** पं. विलासजी महाजन शास्त्री, हराल, **122.कचनेर :** पं. संजयकुमारजी राऊत शास्त्री, **123.आष्टी :** पं. नरेन्द्रजी वानरे शास्त्री, **124.बीड :** पं. कीर्तिजयजी गोरे, **125.देऊलगाँवराजा :** पं. विजयकुमारजी आव्हाने शास्त्री, **126.मुम्बई :** पं. अनंतजी शास्त्री, करावली।

(राजस्थान प्रान्त)

127. **उदयपुर (केशवनगर)** : डॉ. श्रेयांसकुमारजी सिंघई शास्त्री, जयपुर, 128. **बिजौलिया :** डॉ. योगेशकुमारजी शास्त्री, अलीगंज, **129. पीसांगन :** पं. कमलकुमारजी, पिडावा, **130. कोटा :** पं. अनिलकुमारजी शास्त्री, भिण्ड, **131. अलवर :** पं. मानमलजी जैन, कोटा, **132. अलीगढ :** पं. सुजानमलजी गदिया, उदयपुर, **133. बाँसवाडा :** पं. राजकुमारजी शास्त्री, उदयपुर, **134. लकडवास :** पं. हीरालालजी अखावत, **135. लाम्बाखोह :** पं. छोगालालजी, भिण्डर, **136. निवाई :** पं. शिखरचन्दजी शास्त्री, भातडीया, **137. पिडावा :** पं. विनोदकुमारजी, गुना, **138. उदयपुर (सेक्टर 3) :** डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री टोकर, **139. झालावाड :** पं. बाबूलालजी 'सौजन्य', **140. अजमेर :** पं. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर, **141. बून्दी :** पं. संजयजी सिंघई शास्त्री, **142. बून्दी (नैनवा रोड) :** पं. धर्मचन्दजी जयथल, **143. भिण्डर :** पं. चिन्मयजी शास्त्री, पिडावा, **144. भीलवाडा :** पं. स्वानुभवजी शास्त्री, पोरसा, 145. **चित्तौडगढ** : पं. कैलाशचन्दजी जैन, मोमासर, 146. **दौसा** : पं.प्रमोदकुमारजी शास्त्री, टीकमगढ, 147. **जौलाना** : पं. जयन्तिलालजी नौगाँवा, 148. **जौलाना (नाहली)** : पं. रमेशचन्दजी, नौगाँवा, 149. **जयथल** : पं. डूँगरमलजी, सेमारी, 150. **कूण** : पं. लखमीचन्दजी, डूँगरपुर, 151. **कानोड** : पं. मिठालालजी भगनोत, उदयपुर, 152. **लूणदा** : पं. प्रमोदजी शास्त्री, टामटिया, 153. **डडूका** : पं. वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री, 154. **टोंक** : पं. चन्दूलालजी, कुशलगढ, 155. **उदयपुर (से. 5)** पं. माँगीलालजी, लूणदा, 156. **साकरोदा** : पं. रमेशजी जैन, उदयपुर, 157. **कुरावड** : पं. अनिलकुमारजी शास्त्री, खनियाँधाना, 158. **कुचामनसिटी** : पं. विकासजी मोदी शास्त्री, मौ, 159. **रावतभाटा** : पं. प्रदीपजी शास्त्री, दमोह, 160. **पीसांगन** : पं. प्रयंकजी शास्त्री, रहली, 161. **मित्रपुरा** : पं. नयनेशजी शास्त्री, ओबरी, 162. **कुशलगढ** : पं. अतुलकुमारजी देवडिया शास्त्री, अरथूना, 163. **बीकानेर** : पं. अखिलेश कुमारजी शास्त्री, बरा, 164. **अलौद** : पं. अजीतजी शास्त्री, गडखेडा, 165. **बोहेडा** : पं. अनिलकुमारजी शास्त्री, मुम्बई, 166. **बेगूँ** : पं. राजेशजी जैन शास्त्री, सिंगोली, 167. **चौथ का बरवाडा** : पं. कैलाशचन्दजी शास्त्री, 168. **देवली** : पं. जिनेशजी शास्त्री, 169. **दूनी** : पं. दीपकजी गंगवाल, जयपुर, 170. **सारसोप** : पं. नवीनजी शास्त्री, बरा, 171. **थानागाजी** : पं. शैलेन्द्रकुमारजी शास्त्री, दलपतपुर, 172. **वनस्थली** : पं. संदीपकुमारजी शास्त्री, डडूका, 173. **वल्लभनगर** : पं. प्रकाशजी शास्त्री, मुम्बई, 174. **वैर** : पं. सचिन्द्रजी शास्त्री, गढाकोटा, 175. **झालरापाटन** : पं. विक्रान्तजी पाटनी शास्त्री, 176.**झालिनी जी का बराना** : पं. निखिलजी शास्त्री, बण्डा, 177. **झालावाड** : पं. जितेन्द्रजी शास्त्री, खडैरी, 178.**झिलाई** : पं. चेतनजी शास्त्री, खडैरी, 179. **निम्बाहेडा** : पं. सुनीलजी नाके, 180. **पिडावा** : पं. तेजमलजी जैन, 181. **अटरू** : पं. हितेन्द्रजी शास्त्री, गुढ़ा, 182. **उदयपुर** : पं. राजमलजी जैन, 183. **कुचामनसिटी** : पं. राकेशजी शास्त्री, लिधौरा, 184. **सुजानगढ** : पं. अरविंदजी सिंघई शास्त्री, दरगुवाँ, 185. **रूपाहेडी कलाँ** : पं. पद्माकरजी मुंजोले शास्त्री, 186. **बांसवाडा** : पं. महिपालजी जैन, 187. **अलवर** : पं. अजीतजी शास्त्री, फुटेरा, 188. **अलवर** : पं. प्रेमचन्दजी शास्त्री, भौंनी, 189. **अलवर** : पं. अरुणजी शास्त्री, राजुरा, 190. **पिडावा** : पं. नेमीचन्दजी जैन, 191. **बस्सी** : पं. कृष्णचन्दजी शास्त्री, भिण्ड, 192. **प्रतापगढ** : पं. सज्जनलालजी सावरिया, 193. **कोटा** : पं. प्रेमचन्दजी बजाज, 194. **शहाबाद** : पं. भगवतीप्रसादजी शास्त्री, समरानिया, 195. **पारसोली** : पं. संजयकुमारजी शास्त्री, हरसौरा, 196. **डडूका** : पं. रितेशजी शास्त्री, 197. **प्रतापगढ** : पं. सुनीलजी शास्त्री, गैरतगंज, 198. **उदयपुर (गड़रियावास)** : पं. हेमन्तजी शास्त्री, 199. **कल्याणपुर** : पं. अमितजी शास्त्री, 200. **किशनगढ** : पं. पवनजी शास्त्री, शहपुरा, 201. **बारा** : पं. जयकुमारजी जैन, 202. **बारा** : पं. संजीवजी शास्त्री।

(मध्यप्रदेश प्रान्त)

203. **खुरई** : पं. कस्तूरचन्दजी, विदिशा, 204. **केसली** : पं. गुलाबचन्दजी, बीना, 205. **भोपाल (कोहेफिजा)** : पं. कोमलचन्दजी टडा, 206. **सागर (गौरमूर्ति)** : पं. धनसिंहजी ज्ञायक, पिडावा, 207. **भिण्ड (लश्कर)** : पं. सुरेशचन्दजी, टीकमगढ़, 208. **मौ.** : डॉ. दीपकजी शास्त्री, जयपुर, 209. **शाहगढ** : पं. महेन्द्रजी शास्त्री, भिण्ड, 210. **जबलपुर** : पं. सुदीपजी, बीना, 211. **भोपाल (चौक)** : पं. अशोकजी, सिरसागंज, 212. **टीकमगढ** : पं. संजयकुमारजी इंजि., खनियाँधाना, 213. **गुना** : पं. देवेन्द्रकुमारजी, बिजौलिया, 214. **अम्बाह** : पं. ब्र. शिखरचन्दजी भाईजी, 215. **भिण्ड (देवनगर)** : पं. सतीशचन्दजी शास्त्री, पिपरई, 216. **बेगमगंज** : पं. नन्हेलालजी, सागर, 217. **आरोन** : पं. सत्येन्द्रजी, भोपाल, 218. **चन्देरी** : पं. रूपचन्दजी, बण्डा, 219. **द्रोणगिरी** : पं. रमेशचन्दजी, करहल, 220. **धार** : पं. हुकमचन्दजी, राधौगढ़, 221. **दमोह** : पं. मोतीलालजी, करेली, 222. **ग्वालियर (लश्कर)** : पं. अभयकुमारजी शास्त्री, बदरवास, 223. **ग्वालियर (ठाटीपुर)** : पं. महेशचन्दजी शास्त्री, 224. **ग्वालियर (चौक)** : पं. सुनीलजी शास्त्री, 225. **ग्वालियर (मुरार)** : पं. गोकुलचन्दजी सरोज, ललितपुर, 226. **ग्वालियर (सोडे का कुआँ)** पं. विमलकुमारजी, जलेसर, 227. **ग्वालियर (दानाओली)** : पं. इन्द्रकुमारजी गोयल, 228. **गंजबासौदा** : पं. शिखरचन्दजी, विदिशा, 229. **इन्दौर (नरसिंहपुरा)** : पं. मधुकरजी जैन, जलगाँव, 230. **इन्दौर (शक्कर बाजार)** : पं. गुलाबचन्दजी, भोपाल, 231. **इन्दौर (राजमोहल्ला)** : पं. धनसिंहजी जैन, पिडावा, 232. **इन्दौर (रामचन्द्र नगर)** : पं. सुदर्शनजी, बीना, 233. **इन्दौर (छावनी)** : विदुषी पुष्पाबेन, खण्डवा, 234. **इन्दौर (देवास रोड)** : पं. सचिनजी शास्त्री, बरेली, 235. **इन्दौर (गाँधीनगर)** : पं. अभिनवजी मोदी, शास्त्री, 236. **जावरा** : पं. ज्ञानचन्दजी, झालावाड, 237. **सिवनी** : पं. चेतनजी शास्त्री, कोटा, 238. **खडैरी** : पं. कमलेशकुमारजी शास्त्री, मौ, 239. **खनियाँधाना** : पं. सुमतिजी जैन, मलकापुर, 240. **मन्दसौर** : पं. शान्तिलालजी पोसेरिया, महीदपुर, 241. **मन्दसौर** : विदुषी चन्द्रिकाजी पोसेरिया, 242. **नागदा मण्डी** : पं. पदमकुमारजी अजमेरा, 243. **पथरिया** : पं. बाबूलालजी बांझल, गुना, 244. **रतलाम (चाँदनी चौक)** : पं. कमलकुमारजी मलैया, 245. **सागर (मकरोनिया)** : पं. सन्मतिजी मोदी, दलपतपुर, 246. **सागर (कटरा बाजार)** : पं. चित्तरंजनजी शास्त्री, 247. **सिरोंज** : विदुषी सुधाबेन, छिन्दवाडा, 248. **सुसनेर** : पं. तेजमलजी गंगवाल, इन्दौर, 249. **शुजालपुर मण्डी** : पं. शीतलजी पाण्डे, उज्जैन, 250. **सनावद** : पं. जगदीशजी पवार, उज्जैन, 251. **सुजालपुर**

सिटी : पं. पदमकुमारजी, कोटा, 252. **विदिशा (माधवगंज)** : पं. अरुणजी लालोनी, अशोकनगर, 253. **विदिशा (किला अन्दर)** : पं. अजीतकुमारजी, फिरोजाबाद, 254. **बडनगर** : पं. अनिलकुमारजी पाटोदी, 255. **तेजगढ** : पं. आकेशजी जैन, छिन्दवाडा, 256. **विजयपुर** : पं. अशोकजी मांगुलकर शास्त्री, सेनगाँव, 257. **सिलवानी** : पं. धर्मेन्द्रकुमारजी सिंघई शास्त्री, बण्डा, 258. **गोरझामर** : पं. शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री, 259. **घुवारा** : पं. सुरेशचन्दजी टीकमगढ, 260. **हरसूद** : पं. विपिनजी शास्त्री, फिरोजाबाद, 261. **लोहारदा** : पं. विपिनजी शास्त्री, 262. **बण्डा** : पं. सुरेशचन्दजी सिंघई, भोपाल, 263. **बाकल** : पं. श्रेणिकजी जबलपुर, 264. **छिन्दवाडा** : पं. सुशीलकुमारजी, राधौगढ़, 265. **धरमपुरी** : पं. कैलाशचन्दजी, अशोकनगर, 266. **कालापीपल** : पं. महेन्द्रकुमारजी सेठी, शास्त्री, 267. **कर्रापुर** : पं. यशपालजी जैन, दमोह, 268. **करेली** : पं. शान्तिलालजी सोगानी, महिदपुर, 269. **करेली (शुभम कॉलोनी)** : पं. राजीवजी शास्त्री, गुना, 270. **कोलारस** : पं. मनोजजी जैन, करेली, 271. **पिपरिया** : पं. दिनेशकुमारजी शास्त्री, बडामलहरा, 272. **शहडोल** : पं. विजयकुमारजी शास्त्री, चाकसू, 273. **अभाना** : पं. अभिषेकजी शास्त्री, सिलवानी, 274. **आगर** : पं. श्रेयांसजी शास्त्री, अभाना, 275. **बीड** : पं. पंकजजी शास्त्री, बण्डा, 276. **बनखेडी** : पं. प्रक्षालजी शास्त्री, उदयपुर, 277. **उज्जैन (चिमनगंज)** : पं. प्रकाशजी झांझरी, 278. **उज्जैन (चिमनगंज)** : पं. अरहन्तप्रकाशजी झांझरी, 279. **उज्जैन (चिमनगंज)** : पं. सुकुमालजी झांझरी, 280. **उज्जैन** : विदुषी ब्र. पुष्पलताजी झांझरी, 281. **उज्जैन** : विदुषी ब्र. ज्ञानधाराजी झांझरी, 282. **उज्जैन** : विदुषी ब्र. समताजी झांझरी, 283. **रहली** : पं. मनोजजी शास्त्री, अभाना, 284. **गंजबासौदा** : पं. गजेन्द्रजी शास्त्री, बडामलहरा, 285. **शहापुर** : पं. राजेशजी शास्त्री, गुढा, 286. **कुचडौद** : पं. आशीषजी शास्त्री, विनौता, 287. **रन्नौद** : पं. कस्तूरचन्दजी शास्त्री, खडैरी, 288. **अमायन** : पं. अनन्तवीरजी शास्त्री, फिरोजाबाद, 289. **अमरकोट** : पं. रविजी शास्त्री, पिडावा, 290. **अम्बाह** : पं. राहुलजी शास्त्री, बदरवास, 291. **बरगी** : पं. सुदीपजी शास्त्री, 292. **बाबई** : पं. आशीष रोकडे शास्त्री, 293. **गोरमी** : पं. सौरभजी शास्त्री, शाहगढ, 294. **खरेह** : पं. चेतनजी शास्त्री, खडैरी, 295. **मालथौन** : पं. आशीषजी शास्त्री, जबेरा, 296. **रांझी (जबलपुर)** : पं. मनीषजी शास्त्री, खडैरी, 297. **गुना (पार्श्व. म.)** : पं. जितेन्द्रजी शास्त्री, सिंगोली, 298. **अमलाई** : पं. वीरेन्द्रजी शास्त्री, बरा, 299. **गुना** : पं. सुरेशचन्दजी शास्त्री, कोलारस, 300. **उज्जैन** : पं. बेलजी भाई शाह, 301. **कटनी** : पं. संतोषजी शास्त्री, दमोह, 302. **शिवपुरी** : पं. अरविन्दजी, गुरसौरा, 303. **भोपाल (पं. नगर)** : पं. नेमीचन्दजी, छतरपुर, 304. **विदिशा** : पं. चिन्मयजी बडकुल शास्त्री, 305. **खैरागढ़** : पं. पन्नालालजी जैन, 306. **खैरागढ़** : पं. प्रेमचंदजी जैन, 307. **टीकमगढ़** : ब्र. मीनाजी बेन, 308. **टीकमगढ़** : ब्र. ममताजी बेन 309. **छिन्दवाडा** : पं. ऋषभजी शास्त्री, 310. **मन्दसौर** : पं. ज्ञानचन्दजी जैन, 311. **ग्यारसपुर** : डॉ. राजेशजी शास्त्री, विदिशा, 312. **गंजबासौदा** : पं. संजीवजी शास्त्री, इन्दौर, 313. **ग्वालियर** : पं. अजीतकुमारजी अचल, 314. **भिण्ड** : पं. विनितजी शास्त्री, ग्वालियर, 315. **अशोकनगर** : पं. अमोलकचन्दजी जैन, 316. **टीकमगढ़** : पं. अरुणकुमारजी जैन, 317. **बीना** : पं. लखमीचन्दजी जैन, 318. **लोहारदा** : पं. छगनलालजी जैन, 319. **सिवनी** : पं. के.सी. भारिल्ल, 320. **सागर** : पं. रमेशजी मोदी, 321. **बीना** : पं. राजेशजी जैन, 322. **भोपाल** : पं. अनिलकुमारजी भिण्ड, 323. **भोपाल** : पं. राजमलजी जैन, 324. **अमरपाटन** : पं. राजेन्द्रकुमारजी जैन, 325. **निसई (ता. तरण)** : पं. कपूरचन्दजी समैय्या, 326. **बरगी** : पं. सुदीप जैन शास्त्री, 327. **भोपाल** : डॉ. महेशजी गुढा, 328. **मौ.** : ब्र. रविन्द्रकुमारजी जैन, 329. **रायपुर** : पं. नेमीचन्दजी जैन, 330. **गंधवानी** : पं. छगनलालजी जैन, 331. **इन्दौर (तिलकनगर)** : पं. शशिकान्तभाईजी, 332. **दलपतपुर** : पं. विनोद्कुमारजी मोदी, 333. **घोडाडोंगरी** : पं. सुरेशचन्दजी जैन, 334. **दलपतपुर** : पं. निखिलेशजी शास्त्री, 335. **भिण्ड** : पं. उदयमणिजी शास्त्री, 336. **बेरी** : पं. माणिकचन्दजी जैन, 337. **गुना** : पं. सुगनचन्दजी जैन, 338. **गुना** : पं. शिखरचंदजी शास्त्री, 339. **गढ़ाकोटा** : पं. कमलकुमारजी, 340. **टीकमगढ़** : पं. अजयकुमारजी, 341. **इन्दौर** : पं. क्रान्तिकुमारजी पाटनी, 342. **भोपाल** : पं. अनुरागजी शास्त्री, विदिशा, 343. **लोनारा** : पं. नितेंद्रजी जैन शास्त्री.

(उत्तरप्रदेश प्रान्त)

344. **बडौत** : पं. देवचन्दजी जैन, सहारनपुर, 345. **गाजियाबाद (कवि नगर)** : डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल, अमलाई, 346. **आगरा (नमक मण्डी)** : पं. लालारामजी साहू, अशोकनगर, 347. **खेकडा** : पं. मन्नूलालजी जैन, सागर, 348. **आगरा (ताजगंज)** : पं. धनेन्द्रजी सिंघल शास्त्री, 349. **अमरोहा** : पं. मनोजजी जैन, मुजफ्फरनगर, 350. **बरेली (रामपुर बाग)** : पं. वीरेन्द्रजी जैन, फिरोजाबाद, 351. **बरूआ सागर** : पं. मुरारीलालजी, नरवर, 352. **फिरोजाबाद (बडी छपेटी)** : पं. महेशजी, कानपुर, 353. **फरिहा** : पं. संजयजी शाह, शास्त्री, 354. **करहल** : पं. प्रदीपजी शास्त्री, धामपुर, 355. **खतौली** : पं. सतीशजी शास्त्री, महीदपुर, 356. **ललितपुर** : पं. सुबोधजी, सिवनी, 357. **मडावरा** : पं. कुन्दनलालजी, पथरिया, 358. **शिकोहाबाद** : पं. भंवरलालजी, कोटा, 359. **कुरावली** : पं. भागचन्दजी जैन, पथरिया, 360. **गुरसराय** : पं. अजीतजी मडावरा, 361. **खतौली** : पं. कल्पेन्द्रजी जैन, 362. **कानपुर** : पं. अभयजी शास्त्री, खैरागढ, 363. **साहिबाबाद** : पं. जयप्रकाशजी गाँधी, दिल्ली, 364. **गाजियाबाद (वसुन्धरा)** : पं. अशोकजी शास्त्री, रायपुर, 365. **गाजियाबाद (कविनगर)** : पं. अभिनयजी शास्त्री, जबलपुर, 366. **सरधना** : पं. अविरलजी सिंघई शास्त्री, विदिशा, 367. **हरिद्वार** : पं. संदीपजी शास्त्री, गोहद, 368. **कानपुर (किदवई नगर)** : पं. हेमचन्दजी टीकमगढ, 369. **मेरठ (शास्त्रीनगर डी)** : पं. शुद्धात्मजी शास्त्री, मौ., 370. **मेरठ (शास्त्रीनगर बी)** : पं. स्वतंत्रजी शास्त्री, फुटेरा, 371. **मैनपुरी** : पं. मनीषजी शास्त्री, रहली, 372. **खेकडा** : पं. चैतन्यजी शास्त्री, गजपंथा, 373. **रूडकी** : पं. जिनेन्द्रजी शास्त्री, उदयपुर, 374. **सहारनपुर** : पं. नागेशजी पिडावा, 375. **डांडा इटावा** : पं. सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, 376. **झांसी** : पं. हेमन्तकुमारजी शास्त्री, आवा, 377. **धामपुर** : पं. सुरेन्द्रजी शास्त्री, शाहगढ़, 378. **जैतपुर कला** : पं. सौरभजी शास्त्री, शहपुरा, 379. **कानपुर (कराची)** : पं. अभिषेकजी शास्त्री, रहली, 380. **कासगंज** : पं. धर्मेशजी शास्त्री, रैयाना, 381. **सिरसागंज** : पं. अजीतजी शास्त्री, मौ, 382. **एत्मादपुर** : पं. जितेन्द्रजी यादव शास्त्री, बानपुर, 383. **बाह** : पं. सुनीलजी शास्त्री, शाहगढ, 384. **बाह** : पं. अनुपमजी शास्त्री, अमायन, 385. **भोगाँव** : पं. अश्विनकुमारजी शास्त्री, नानावटी, 386. **भोगाँव** : पं. नितिनजी शास्त्री, अहमदाबाद, 387. **सकीट** : पं. आशीषजी शास्त्री, कोटा, 388. **सैमरा** : पं. देवेन्द्रजी शास्त्री, अकाझिरी, 389. **बागपत** : पं. नितिनजी शास्त्री, विदिशा, 390. **बागपत** : पं. अतुलकुमारजी शास्त्री, बण्डा, 391. **रसूलपुर** : पं. दीपेशजी शास्त्री, गुढ़ा, 392. **ललितपुर** : पं. भानुकुमारजी शास्त्री, 393. **खतौली** : पं. सोनूजी पाण्डे शास्त्री, फिरोजाबाद, 394. **अफजलगढ** : पं. सलेखचन्दजी शास्त्री, 395. **आगरा** : पं. विनितजी शास्त्री, 396. **ब्रजपुर** : पं. नरेशजी शास्त्री, 397. **गंगेरु** : पं. ऋषिराजजी शास्त्री, बरा।

(शेष पृष्ठ 10 पर ...)

विज्ञापन पत्रिका

विज्ञापन पत्रिका

(गुजरात प्रान्त)

398. **फतेपुर (मोटा)** : पं. बाबूभाई मेहता, 399. **वापी** : पं. मीठाभाईजी दोशी, 400. **अहमदाबाद (मेघाणी नगर)** : पं. नन्दकिशोरजी गोयल, 401. **अहमदाबाद (पालडी)** : पं. दिलीपजी बाकलीवाल, इन्दौर, 402. **हिम्मतनगर** : पं. रमेशचन्दजी शास्त्री, जयपुर, 403. **तलोद** : पं. विक्रान्तजी शाह शास्त्री, सोलापुर, 404. **बडोदरा** : विदुषी चेतनाबेन रखियाल, 405. **दाहोद** : पं. राकेशजी शास्त्री, परतापुर, 406. **अहमदाबाद (बहेरामपुरा)** : पं. रतनचंदजी शास्त्री, कोटा, 407. **अहमदाबाद (बापूनगर)** : पं. बृजलालजी, टोकर, 408. **अहमदाबाद (मणिनगर)** : पं. निलयजी शास्त्री, टीकमगढ, 409. **अहमदाबाद (नवरंगपुरा)** : पं. विपुलजी मोदी, शास्त्री, 410. **अहमदाबाद (जैन मिलन)** : पं. सुमतजी शास्त्री, बरा, 411. **अहमदाबाद (पालडी)** : पं. सुदीपजी तलाटी शास्त्री, 412. **अहमदाबाद (अमराईवाडी)** : पं. पुलकितजी शास्त्री, कोटा, 413. **अहमदाबाद (ओढव)** : पं. स्वप्निलजी शास्त्री, नागपुर, 414. **पोरबंदर** पं. पियूषजी शास्त्री, जयपुर, 415. **रखियाल** : पं. अनिलकुमारजी शास्त्री, मुम्बई, 416. **मोरबी** : पं. विकासजी शास्त्री, बानपुर, 417. **झींझवा** : पं. पंकजजी शास्त्री, खडैरी, 418. **जैतपुर** : पं. वरुणजी शाह शास्त्री, मुम्बई, 419. **हिम्मतनगर** : पं. रजनीभाईजी दोशी, 420. **राजकोट** : पं. सुनीलजी जैनापुरे शास्त्री, 421. **गोंडल** : डॉ. अरविन्दजी दोशी, 422. **भुज** : पं. हर्षदभाई पांचाल, 423. **सूरत** : पं. धीरेन्द्रजी जैन, 424. **अहमदाबाद** : पं. दीपचन्दजी जैन, 425. **सोनगढ** : पं. रमेशजी मंगल।

(अन्य प्रान्त)

(कर्नाटक प्रान्त) : 426. **बैंगलोर** : पं. संजयकुमारजी शास्त्री, नागपुर, 427. **बैगलोर** : पं. किशोरकुमारजी शास्त्री, राजूरा, 428. **बेलगाँव** : पं. ऋषभकुमारजी शास्त्री, ललितपुर, 429. **बेलगाँव** : पं. अनेकान्तजी शास्त्री, 430. **बेलगाँव (चनम्मा नगर)** : पं. राम कस्तूरेजी, 431. **बेलगाँव** : पं. महावीरजी शास्त्री, बखेडी, 432. **बैंगलोर** : पं. जयराजनजी शास्त्री, 433. **हुबली** : पं. बाहूबलीजी भोसगे, 434. **मैसूर** : पं. आनन्दकुमारजी, 435. **औराद** : पं. सन्तोषकुमारजी मिणचे शास्त्री, बोरगाँव, 436. **आलंद** : पं. विशालजी सर्राफ शास्त्री, नासिक।

(पश्चिम बंगाल) : 437. **कोलकाता** : पं. अनुभवप्रकाशजी शास्त्री, कानपुर 438. **कोलकाता** : पं. महावीरजी मांगुलकर शास्त्री, कारंजा, 439. **कोलकाता** : पं. देवेन्द्रजी शास्त्री, नागपुर।

(हरियाणा) : 440. **चंडीगढ़** : पं. विरागजी शास्त्री, जबलपुर, 441. **हिसार** : पं. शीतलजी हेरवाडे शास्त्री, कोल्हापुर, 442. **झज्झर** : पं. अरुणजी शास्त्री, मौ., 443. **बहादुरगढ़** : पं. किरणजी पाटील शास्त्री, दानोली, 444. **गन्नौर मण्डी** : पं. विजयजी बोरालकर शास्त्री, वाघजली, **(केरल)** 445. **कोच्चि** : पं. धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, बडामलहरा, **(झारखंड)**446. **ठाकुरगंज** : पं. महेशजी जैन, भोपाल, **(बिहार)**447. **हजारीबाग** : पं. नितिनजी शास्त्री, भिण्ड, **(तमिलनाडू)**448. **चेन्नई** : पं. जम्बूकुमारजी शास्त्री।

(दिल्ली प्रान्त)

(मध्य दिल्ली) : 449. **मंटोला पहाडगंज** : पं. आशीषजी शास्त्री, टीकमगढ़, 450. **शंकर रोड** : पं. राजेन्द्रजी शास्त्री, खडैरी, 451. **शंकर (अहिंसा)** : पं. विशालजी कान्हेड शास्त्री, हिंगोली, 452. **आर्यपुरा (सब्जी मण्डी)** : पं. अशोकजी शास्त्री, 453. **विश्वास नगर** : पं. संजीवजी शास्त्री, खडैरी, 454. **भारतनगर** : पं. संजयजी शास्त्री, बडामलहरा, 455. **मंहिद्रा पार्क (जहाँगिरपुरी)** : पं. सौरभजी शास्त्री, 456. **वेदवाडा (चांदनी चौक)** पं. गौरवजी शास्त्री, चंदेरी, 457. **कूचा पातीराम** : पं. अमितजी शास्त्री, भोपाल, 458. **राजा बाजार (शिवाजी स्टेडियम)** : पं. मेहूलजी शास्त्री, कोलकाता।

(पश्चिमी दिल्ली) : 459. **वल्लभविहार (रोहिणी)** : पं. मनीषजी सिद्धांत शास्त्री, खडैरी, 460. **जनकपुरी (बी 1)**: पं. संदीपजी शास्त्री, बांसवाडा, 461. **जनकपुरी (02 ए)** : पं. नितिनजी जैन, नांगलराया, 462. **पालम कॉलोनी** : पं. बाहुबलीजी दादन्नवार, शास्त्री, 463. **अध्यापकनगर** : पं. सुधाकरजी शास्त्री इंडी, 464. **सुंदर विहार** : पं. अरुणजी शास्त्री, बडामलहरा, 465. **नांगलोई** : पं. चिन्मयजी शास्त्री, गुढाचंद्रजी, 466. **सरस्वती विहार** : पं. राकेशजी शास्त्री, दिल्ली, 467. **मिलापनगर** : पं. आकाशजी जैन शास्त्री, 468. **अशोकविहार** : पं. गणतंत्रजी शास्त्री, खरगापुर, 469. **लॉरेंस रोड** : पं. मनोजजी जैन, शास्त्री पार्क, 470. **आत्मार्थी ट्रस्ट** : ब्र. कैलाशचंदजी अचल शास्त्री, 471. **आत्मार्थी ट्रस्ट** : पं. राकेशजी जैन, शास्त्री, 472. **अशोका एन्क्लैव** : पं. संतोषजी बोगार, शास्त्री।

(दक्षिणी दिल्ली) : 473. **गोविन्दपुरी** : पं. संजीवजी जैन, उस्मानपुर, 474. **बसंतकुंज** : पं. राजकमलजी शास्त्री, बांसवाडा, 475. **सरोजनीनगर** : पं. प्रकाशचन्दजी ज्योतिर्विद।

(पूर्वी दिल्ली) : 476. **लक्ष्मीनगर** : पं. सत्येंद्रमोहनजी जैन, 477. **छोटा बाजार (शाहदरा)** : पं. अशोकजी गोयल शास्त्री, 478. **बाहुबली एन्क्लेव** : पं. अशोकजी जैन शास्त्री, 479. **बॅंक एन्क्लैव** : पं. भानूजी शास्त्री, खडैरी, 480. **पडपडगंज** : पं. सिद्धार्थजी दोशी, रतलाम, 481. **दिलशाद गार्डन** : पं. नवीनजी शाहदरा, 482. **शिवाजी पार्क** : पं. रामकिशोरजी कोटा, 483. **शिवाजी पार्क** : पं. प्रशांतजी मोहरे शास्त्री, सोलापुर, 484. **भजनपुरा** : पं. सुकुमालजी, बडौत, 485. **पाण्डवनगर** : पं. नरेन्द्रजी जैन, जबलपुर, 486. **ऋषभविहार** : डॉ. अशोकजी गोयल, 487. **शंकरनगर** : पं. ऋषभकुमारजी शास्त्री, 488. **उस्मानपुर** : पं. ऋषभजी शास्त्री, 489. **पालमगाँव** : पं. आशीषजी शास्त्री, विदिशा, 490. **दिल्ली** : पं. सुधीरजी शास्त्री, जबलपुर, 491. **न्यू ताहौर (शास्त्रीनगर)** : पं. समकितजी शास्त्री, सिलवानी, 492. **सरिता विहार** : पं. सुशीलजी शास्त्री, फुटेरा, 493. **नवीन शाहदरा** : पं. श्रेयांसजी शास्त्री, जबलपुर, 494. **दिलशाद गार्डन** : पं. विकासजी शास्त्री।

(जयपुर)

495. **जयपुर (पं. टोडरमल स्मारक)** : विदुषी ब्र. कल्पना बेन सागर, 496. **जयपुर (आदर्श नगर)** : पं. जवाहरलालजी बडकुल, विदिशा, 497. **जयपुर (मानसरोवर, वरुणपथ)** : डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री, भोपाल, 498. **जयपुर (खजांची की नसियाँ)** : पं. राजेशजी शास्त्री, शाहगढ, 499. **जयपुर (जनता कॉलोनी)** : पं. राजेशजी शास्त्री, शाहगढ, 500. **जयपुर (सांगानेर)** : पं. चिरंजीलालजी 501. **जयपुर (सांगानेर)** : डॉ. अल्काजी सेठी, 502. **जयपुर (बडा मन्दिर)** : डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री, भोपाल, 503.**जयपुर (किशनपोल बाजार)** : डॉ. प्रभाकरजी सेठी, 504. **जयपुर (मंदिर भदीचंदजी)** : पं. सन्तोषजी झांझरी, 505. **जयपुर (जवाहरनगर से. 7)** : पं. विपिनजी शास्त्री, श्योपुरकला, 506. **जयपुर (एस.एफ.एस. कॉलोनी)** : पं. ज्ञानचन्दजी शास्त्री, कुडीला, 507. **जयपुर (मालवीयनगर से. 10)** : पं. विनयजी पापडीवाल, 508. **जयपुर (स्टेशन रोड)** : विदुषी शकुन्तलाजी, 509. **जयपुर (प्रतापनगर)** : पं. कैलाशजी मलैया, 510. **जयपुर (अग्रवाल फार्म)** : पं. विनयजी पापडीवाल, 511. **जयपुर (कमला नेहरुनगर)** : विदुषी राजकुमारीजी।

तथा जयपुर के विभिन्न स्थानों पर **क्रमांक 512 से 517 तक** पं. पीयूषकुमारजी शास्त्री, पं. भागचंदजी शास्त्री, पं. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पं. शिखरचंदजी शास्त्री, पं. अनिलजी सौजना, पं. श्रीमन्त नेज इत्यादी विद्वान प्रवचन हेतु पधारेंगे।

तत्वचर्चा

समयसार का सार 52

गतांक से आगे

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

इसके संदर्भ में मेरा एक संस्मरण है। एक महिला मेरे कार्यालय में आयी; उसे णमोकार मंत्र का विधान कराना था। सभी पण्डितों ने उन्हें मना कर दिया था कि णमोकार मंत्र का कोई विधान नहीं है; अतः आप यहाँ णमोकार मंत्र का विधान नहीं कर सकती। जब मुझे यह पता चला, तब मैंने कहा कि कौन कहता है कि णमोकार मंत्र का विधान नहीं है। पंचपरमेष्ठी विधान किसका है? णमोकार मंत्र जब बोलते हैं तो पाँचों परमेष्ठियों का उल्लेख होता है और इस विधान में भी पाँचों परमेष्ठियों की पूजन होती है, अर्घ्य चढ़ते हैं। यदि कोई णमोकार मंत्र विधान बनाएगा तो उसमें वह अरहंत, सिद्ध आदि पंचपरमेष्ठी की ही पूजन करेगा एवं उनके गुणों को अर्घ्य चढ़ाएगा। अतः पंचपरमेष्ठी विधान और णमोकार मंत्र विधान पृथक्–पृथक् नहीं हैं, एक ही हैं।

इसप्रकार जबतक पूर्वापर तर्क और युक्तियों के माध्यम से क्यों, कैसे, किसप्रकार ? – यह चिन्तन नहीं चलता है; तबतक हमारा वास्तविक प्रयोजन सधता नहीं है।

आज विधान करनेवाले, पूजन करनेवाले चिंतन अर्थात् विचार तो करते ही नहीं हैं; वे कहते हैं कि विचार करने का कार्य आप जैसे विद्वानों का है, हमारा कार्य तो विधान कराने का है, गाने का है, बजाने का है, नृत्य करने का है।

सुस्वर नामकर्म वाले पण्डित विधानकर्त्ता बनते हैं तो वे पण्डित से पंडा बन जाते हैं, गवैया, नचैया बन जाते हैं। ये सुस्वर नामकर्म उन्हें गणधरदेव की गद्दी से उतारकर गवैया बनाता है। जो काम समवशरण में तीर्थंकरदेव करते थे, गणधर करते थे; उससे निवृत्त होकर ये लोग गीत गाने लगते है।

एक भाई ने मुझसे कहा कि अभी आपको एक काम करना बाकी है ?

मैंने पूछा, कौनसा ?

तो वे कहते हैं कि आपने सब काम बहुत बढ़िया किये हैं; लेकिन अभी तक आपने अपना उत्तराधिकारी तैयार नहीं किया।

मैंने कहा – 'हम कर रहे हैं।'

उन्होंने पूछा – 'कितने हो गए।'

मैंने कहा कि 250 हो गए। जिस दिन से छात्र हमारे महाविद्यालय में भर्ती होने के लिए आता है; उसी दिन से प्रवचन करने के लिए प्रवचन की गद्दी पर बैठता है। उसी गद्दी पर बैठकर प्रवचन करता है, जिसपर बैठकर हम करते हैं।

अरे भाई ! कौन किसकी गद्दी पर बैठता है, हर एक अपनी–अपनी गद्दी पर बैठता है। क्या अजितनाथ, आदिनाथ की गद्दी पर बैठे थे ? दूसरों की गद्दी पर बैठनेवाले गद्दी को बदनाम ही करते हैं; जिनमें क्षमता होती है, उन्हें दूसरे की गद्दी पर बैठने की उत्सुकता नहीं होती। वे अपनी गद्दी बनाने में समर्थ होते हैं। इसलिये हमारे बाद कौन ? यह प्रश्न ही निरर्थक है।

यह आत्मा पर से सर्वथा भिन्न है। पर से भिन्न स्वयं में समा जाओ – यही सबसे महान कार्य है। स्वयं से महान कोई नहीं; अतः पर की ओर मत देखो – यही धर्म है, धर्म का सार है, संवर है।

चौदहवाँ प्रवचन

संवराधिकार का प्रकरण चल रहा है। भेदविज्ञान का क्या महत्त्व है ? भेदविज्ञान का मुक्तिमार्ग में क्या स्थान है ? – इस बात को पूर्व प्रकरण में विस्तार से स्पष्ट किया जा चुका है। इस प्रकरण का केन्द्रबिन्दु यह है कि आजतक जितने भी सिद्ध हुए हैं; वे सब इस भेदविज्ञान के बल से ही हुए हैं एवं जितने भी जीव चार गति और चौरासी लाख योनियों में भटक रहे हैं; वे सब इस भेदविज्ञान के अभाव से ही भटक रहे हैं।

भेदविज्ञान की उपयोगिता ध्यान में आते ही यह प्रश्न सहज ही उपस्थित होता है कि क्या भेदविज्ञान जैनदर्शन की ही विशेषता है; क्योंकि भगवान आत्मा का जैसा स्वरूप समयसार में बताया गया है; लगभग वैसा ही वेदान्त में भी बताया गया है।

गीता में कहा गया है –

नैवं छिन्दंति शस्त्राणि नैवं दहति पावकः।

आत्मा शस्त्रों से छिदता नहीं, अग्नि से जलता नहीं और पानी से गलता नहीं । जिसप्रकार जैनदर्शन में आत्मा को देह से भिन्न कहा है उसीप्रकार वेदान्त शास्त्रों में भी आत्मा को देह से भिन्न स्वीकार किया गया है। जिसप्रकार हम नये वस्त्र पहनते हैं और पुराने वस्त्र छोड़ देते हैं; वैसे ही शरीर को भी आत्मा बदलता रहता है। वेदान्त और समयसार परमागम की विषयवस्तु लगभग एक–सी ही है, समान ही है – ऐसा भ्रम होता है।

यद्यपि ऊपरी तौर पर कुछ समानताएँ हैं; तथापि अंतर में बहुत बड़ा अंतर है। वह अंतर भेदविज्ञान का है।

वेदान्त में कहा गया है –

lo o [kfYon cã ug ukukfLr fdpuA
vkjke rL; i';fUr u r i';fr d'puAA

सम्पूर्ण जगत ब्रह्ममय है, भिन्न–भिन्न कुछ भी नहीं है। इस जगत को जो भिन्न–भिन्न देखता है, वह अज्ञानी है। जो इस जगत को एक मानता है, वह ज्ञानी है। रामायण में कहा है –

*fl;kjkee; lc tx tkukA^

अद्वैत वेदान्त के अनुसार सबको एक मानना, अभेद जानना ही ज्ञान है और सबको भिन्न–भिन्न मानना अज्ञान है। वेदान्त में 'मैं और भगवान' भिन्न–भिन्न तत्त्व हैं – ऐसा मानना अज्ञान है एवं 'मैं और भगवान' एक ही हूँ – ऐसा मानना ज्ञान है। जबकि जैनदर्शन यह कहता है कि दो द्रव्यों को एक मानना अज्ञान है। अरहंत और सिद्ध इस जीव से भिन्न तत्त्व हैं एवं उनके आश्रय से भी राग की ही उत्पत्ति होगी, पुण्य का बंध ही होगा। अतः अरहंत, सिद्ध का आश्रय भी धर्म नहीं है। अपना यह आत्मा और अरहंत –सिद्ध भगवान सर्वथा स्वतन्त्र चैतन्यतत्त्व है। इसप्रकार जगत को दो भागों में बाँटकर उसमें भेद की रेखा खींचना ही जैनदर्शन का भेदविज्ञान है। गीता, उपनिषद् अथवा वेदान्त कहता है कि दोनों में जो जैनदर्शन ने भेद की रेखा खींची है, वह अज्ञान है; उनको एक मानना ही सम्यग्ज्ञान है। इसप्रकार वेदान्त और समयसार परमागम की विषयवस्तु में महान अन्तर है और वह अन्तर भेदविज्ञान का ही है।

जैनदर्शन प्रत्येक आत्मा को सबसे भिन्न एक स्वतंत्र पदार्थ मानता है; उसका परद्रव्य के साथ कुछ भी संबंध नहीं है। इसप्रकार जानकर स्व–आत्मा में लीन होना ही अनन्त सुखी होने का उपाय है। जबकि वेदान्त में यह कहा गया है कि भगवान और स्व–आत्मा को एक जानकर उसमें लीन होना ही सुखी होने का उपाय है। इसप्रकार वेदान्तशास्त्रों में अपनी सत्ता को भगवान में समाहित करने को ही सुखी होने का उपाय कहा है। इसप्रकार हम देखते हैं कि जिन अध्यात्म में और वेदान्त के अध्यात्म में सबसे बड़ा अंतर भेदविज्ञान का ही है।

यह संवर अधिकार भेदविज्ञान के अभिनन्दन का अधिकार है, उपसंहार का अधिकार है। समयसार के मंदिर पर शिखर चढ़ाने का अधिकार है।

इसप्रकार जैनदर्शन में भेदविज्ञान का क्या स्थान है – इसका प्रकरण पूर्ण हुआ।

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

चल शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

1. भीण्डर (उदयपुर) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति उदयपुर द्वारा संचालित चल शिक्षण-शिविर के पंचम चरण में आठ दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित निलयकुमारजी शास्त्री के ध्यान एवं चार अभाव विषय पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा एवं जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया। अन्तिम दिन आयोजित परीक्षा में उत्तीर्ण बालकों को अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा भीण्डर की ओर से पुरस्कृत किया गया।

2. कुराबड़ (उदयपुर) : यहाँ दिनांक 11 से 20 अगस्त तक चल शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित निलयकुमारजी शास्त्री टीकमगढ़ के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा ली गई एवं रात्रि में ध्यान विषय पर प्रवचन हुये।

इन्द्रध्वज महामण्डल विधान

बड़नगर (उज्जैन) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ जिनालय, बड़ा मंदिर में श्री दिग. जैन महिला मण्डल द्वारा दिनांक 26 जुलाई से 4 अगस्त 2002 तक इन्द्रध्वज मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: एवं सायं डॉ. कपूरचन्दजी 'कौशल', पण्डित राजमलजी पवैया, पण्डित रमेशचन्दजी बांझल इन्दौर, पण्डित सुशीलकुमारजी राघौगढ़, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित अनिलजी पाटोदी के प्रवचन हुये। प्रतिदिन रात्रि में पण्डित सुबोधजी, पण्डित अभिनवजी एवं पण्डित विरागजी द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न कराये गये।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य बालब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन में सम्पन्न हुये। **- अशोककुमार शाह**

प्रवचनों का आयोजन

जसवन्तनगर (इटावा) : यहाँ डेढ़ माह तक निरन्तर ब्र. कल्पनाबेन द्वारा प्रात: एवं सायं क्रमश: सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका एवं रत्नकरण्डश्रावकाचार पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रतिदिन प्रवचनोपरान्त होनेवाले प्रश्नमंच का पुरस्कार वितरण दि. जैन महिला मिलन एवं जसवन्तनगर समाज द्वारा किया गया। दोपहर में प्रतिदिन परमभावप्रकाशक नयचक्र पर कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

वैराग्य समाचार

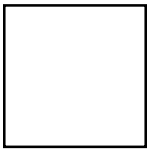

कोटा : श्री बसंतीलालजी पटवारी का 64 वर्ष की आयु में 16 अगस्त 2002 को देहावसान हो गया है। आप दि. जैन मुमुक्षु मण्डल के उपाध्यक्ष एवं श्री कुन्दकुन्द शिक्षण केन्द्र ट्रस्ट, कोटा के मंत्री थे। तथा कोटा में पूज्य कानजीस्वामी द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान की आराधना और प्रचार-प्रसार के प्रमुख स्तम्भ थे।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो यही मंगल कामना है।

सितम्बर माह में आनेवाली 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

12 सितम्बर	-	भगवान सुपार्श्वनाथ का गर्भकल्याणक
14 सितम्बर	-	भगवान पुष्पदन्त का मोक्षकल्याणक
20 सितम्बर	-	भगवान वासुपूज्य का मोक्षकल्याणक

चमके आत्म-स्वरूप

महापर्व का आगमन, देता अवसर नेक ।
करो साधना शक्तिभर, सौ बातों की एक ।।1।।
क्षमा धर्म का सार है, दया धर्म का मूल ।
क्रोध-मान के नाश से, होता जग अनुकूल ।।2।।
लोभ पाप का बाप है, त्यागो इसे त्वरन्त।
सरल और निर्लोभ से, होय असाता अन्त।।3।।
त्यागो नित दुर्वृत्ति को, करो सदा उपकार।
त्याग धर्म से सहज ही, हो जाता उद्धार ।।4।।
धर्म जगत में एक है, लक्षण होंय अनेक।
दशलक्षण का चिंतवन, खोले द्वार विवेक।।5।।
लोभ और माया मिले, खुलें नरक के द्वार।
मृत्यु और दु:ख दर्द का, काल करे व्यापार।।6।।
सत्य शक्ति का स्रोत है, सतत करो अभ्यास।
संयम औ तप तेज से, दुर्गुण रहें न पास।।7।।
कंचन से उत्तम सदा, आकिंचन का रूप।
ब्रह्मचर्य के जागते, चमके आत्म-स्वरूप।।8।।

- विद्यावारिधि डॉ.महेन्द्रसागर प्रचंडिया

हार्दिक आमंत्रण

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी दशहरे के अवसर पर लगनेवाला आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर जयपुर में दिनांक 13 अक्टूबर से 22 अक्टूबर तक आयोजित किया जा रहा है।

सभी साधर्मी बन्धुओं को शिविर के अवसर पर पधारने हेतु हमारा हार्दिक आमंत्रण है। शिविर की आमंत्रण पत्रिका अगले अंक में प्रकाशित की जायेगी।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) सितम्बर (प्रथम) 2002
आई. आर. / R. J. **3002/02**

प्रति,

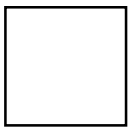

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर**, एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 705581, 707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 704127